जिनवाणी स्तवन

जय-जय जिनवाणी नमो-नमो।
त्रिभुवन कल्याणी नमो-नमो (टेक)

1. मुक्ता की माला नमो-नमो, निधियों की शाला नमो-नमो।
   रत्नों की खानी नमो-नमो ॥
2. वैभव की दात्री नमो-नमो, कल्याण विधात्री नमो-नमो।
   देवी ब्रह्माणी नमो-नमो ॥
3. सब जग की माता नमो-नमो, आगम-विख्याता नमो-नमो।
   आत्मा की कहानी नमो-नमो ॥
4. जिनपति की करुणा नमो-नमो, जिनशासन-महिमा नमो-नमो।
   अरिहन्त निशानी नमो-नमो ॥
5. हे तीर्थ सुपावन नमो-नमो, निर्वृति की कारण नमो-नमो।
   हे अमृत-निधानी नमो-नमो ॥

मंगल पाठ

मंगल करने वाला, कुशल-क्षेम करने वाला और इस भव (जन्म) व परभव में कल्याण करने वाला मन्त्र 'मंगल-पाठ' कहलाता है। जैन उपासक प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में गुरुजनों से निम्नलिखित मंगल पाठ सुनते हैं (मंगल-पाठ को 'चतुःशरण सूत्र' भी कहते हैं)। यह इस प्रकार हैः—

1. चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥

अर्थः— लोक में चार मंगल हैं- अरिहन्त मंगल हैं, 2. सिद्ध मंगल हैं, 3. साधु मंगल हैं, 4. केवली-प्रणीत (तीर्थंकरों द्वारा फरमाया गया) जिन-धर्म मंगल है।

2. चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

अर्थः— लोक में चार उत्तम हैं- 1. अरिहंत उत्तम हैं, 2. सिद्ध उत्तम है, 3. साधु उत्तम हैं, 4. केवली-प्रणीत जिन-धर्म उत्तम है।

3. चत्तारि-सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि,
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

अर्थः— मैं चार की शरण ग्रहण करता हूँ। 1. अरिहंतों की शरण ग्रहण करता हूं। 2. सिद्धों की शरण ग्रहण करता हूँ। 3. साधुओं की शरण ग्रहण करता हूँ। 4. केवलीप्रणीत जिन-धर्म की शरण ग्रहण करता हूँ।

चार शरण दुख-हरण जगत् में, और न शरण कोई होगा।
जो भव्य प्राणी करे आचरण, उसका अजर अमर पद होगा ॥

ज्ञान वृद्धि के उपाय

बच्चों अगर आपको अपने ज्ञान (Knowledge) को बढ़ाना है तो निम्न लिखित बातों का पालन करने से आपका ज्ञान बढ़ जाऐगाः—

1. परिश्रम (Hard work) करने से
2. नींद (Sleep) कम करने से
3. भूख से कम खाकर
4. मौन (Silent) रह कर
5. ज्ञानी के पास अभ्यास करने से
6. गुरु की विनय करने से
7. ससांर के प्रति वैराग्य के साथ ज्ञान सिखने से
8. सीखे हुए ज्ञान का परावर्तन (Revision) करने से
9. पाँचों इन्द्रियों (Senses) को वश में करने से
10. बह्मचर्य (Celibacy) का पालन करने से
11. कपट रहित तप करने से